प्रश्न 2. महाकवि विधापति रचित " विरहिनी " शीर्शक कविताक भावार्थ स्प्श्ट करू ।

उतर- *महाकवि विधापति रचित "विरहिनी " शीर्शक रचना बर प्रसिध्द अछि । एहिमे अलंकारक क्षंकार सर्वत्र भेटत , पद लालित्य , श्रुति माधुर्य सेहो अछि । परंच एतय नायिका विरहावस्थाक वर्नक दुखद अछि । जे वसंतक आगमन सँ प्रियतमकें संग नहि रहला सँ विदग्ध भेल अछि ।*

" सरसिज विनुसर , सन बिनु सरसिज, की सरसिज बिनु सूरे

जौवन बिनु तन , तन बिनु जौवन , की जौवन पिये दूरे।

यौवनवति नायिका कें प्रियेतम दूर छन्हि ।वसंतक आगमन भ चुकल अछि। नायिका स्थिति ओहिना भेल अछि जेना कमल फूलक बिनु जलाश्य , आ जलाश्य रहित कमल फूल मौलाए जाइछ, त बिनु सूर्यक कमल फूल फूलाइत नहि अछि ।वैह स्थिति एहि जौवंबतीक अछि ।जेना शरीर जौवन बिनु शोभा नहि पबैत अछि ।वैह एहि यौवनावती नायिकाक अछि ओ जल बिनु माछ जकाँ दुःख पाबि रहल छथि।

Scanned by CamScanner

मदन वेदन भर , पिया मोरा बोलछर , अबहुँ देहे परबोधि।

चौदिस भमर भम, कुसुमे - कुसुमे रम, नीरस माजरि पीवइ

मंद पवन बह , पिक कुह कुह कह, सुनि विरहिनि कैसे जिबइ।।

विरहिनी नायिका अपन व्यथा सखिसँ कहैछ हे सखी हमर प्रियेतम हमरासँ दूर छथि । कामवेदना असह्य कस्ट द रहल अछि ।हमर प्रियेतम त अपन देल वचन्कें भंग कैलनि तखनो अहाँ हमरा बोल - भरोस दै छी। चारू दिशामे भ्रमर भन-भन क रहल अछि, ओ फूले - फूल बैसि रसपान क रहल अछि । भ्रमर आमक नीरस मज्जर पर रसक लोभमे बैसि इछजा । वसंतक मंद , मधुर वसात , कोइलिक कू-कू करब

सिनेह अछल ,जत हम भेलन टुटत ,बर बोल जत सेवइ धीरे।

अइसन बोल दहु.निअ सीमतेज कहु ,उछलु पयोनिधि - नीरे ।।

हे सखि आब विरह - व्यवस्था सहन नहि भ रहल अछि ।हमरा हुनका पर पूर्न विश्वास अछि जे ओ अपन वचनक मान जरूर रखता श्रेश्ट्जन अपन वचन कें जरूर रखैत छथि । हमरा विश्वास नहि भ रहल अछि जे समुद्रक जल उछलि सकैत अछि। तखन हमर प्रियतम हमरासँ कियैक नहि मिलैत छथि। तखन हमर प्रियेतम त गुनग्राही पुरूश छथि , कोमल स्वभव के छथि , तइन एतेक कटोर कोना भ सकैत छथि । हे सखि

Scanned by CamScanner

अहाँ धैर्य धारन करू अहाँक प्रियेतम निश्चित गुनग्राहक छथि । ओ अहाँ कें कोना बिसरि सकैत छथि । यौवन सँ पूर्न रूपसी - बिर्हिनी नारिका प्रियेतमसँ दूर अपन जीवन निर्थक प्रतीत होइत छन्हि ।

Scanned by CamScanner